❶ ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न क्वेयं यथा त्वम्।

सामवेद 203

हे प्रभो तुझ जैसा काई नहीं है। आप अनुपम हैं।

O God ! Verily there is none like you.
You are matchless.

वर्ष 41, अंक 50 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 अक्तूबर, 2018 से रविवार 7 अक्तूबर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली: 25-26-27-28 अक्टूबर, 2018

सम्मेलन स्थल स्वर्णजयन्ती पार्क में महर्षि दयानन्द नगर निर्माण कार्य जोरों पर

दिल्ली में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियों के लिए सम्मेलन स्थल पर महर्षि दयानन्द नगर निर्माण का कार्य बहुत ही उत्साह के साथ तीव्रता से चल रहा है। महासम्मेलन के आयोजन उल्टी गिनती आरम्भ हो गई हैं। लगभग 2 लाख वर्ग मीटर के सम्मेलन स्थल को विभिन्न भागों में बांटकर निर्माण कार्य किया जा रहा है। कार्यकर्ता दिन-रात सम्मेलन स्थल में पर सेवा कार्यों में लगे हुए हैं।

मानव कल्याण एवं विश्वशान्ति एकता यज्ञ

क्यों जरूरी है आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 में विराट यज्ञ का आयोजन

ज़रा सोचिये! क्या नजारा होता होगा जब वैदिक काल में सैंकड़ों-हजारों की संख्या में उपस्थित लोग एक साथ मिलकर यज्ञ करेंगे। हालाँकि प्राचीन काल में हर घर में भी दैनिक यज्ञ होते थे किन्तु इसके उपरान्त भी पहले बड़े-बड़े राजा महाराजा भी यज्ञ के रहस्य को भली प्रकार समझते थे। समाज को एक करने लिए वह बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन किया करते थे। पाण्डवों ने योगिराज कृष्ण की अनुमति से राजसूय यज्ञ कराया था। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अश्वमेधादि बहुत बड़े- बड़े यज्ञ कराये थे। दुष्यन्त के पुत्र भरत के एक सहस्त्र अश्वमेध यज्ञ का वर्णन मिलता है। महाराजा अश्वपति ने ऋषियों को सम्बोधित करते हुए कहा था हे- महाश्रोत्रियो! मेरे राज्य में कोई चोर, कृपण, शराबी विद्यमान नहीं है क्योंकि मेरे राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक प्रतिदिन यज्ञ करता है। तीर्थों की स्थापना का आधार यज्ञ ही थे। असल में इस पुण्य भूमि में इतने यज्ञ होते रहे कि हमारा देश ही यज्ञिय देश कहलाया।

जहाँ बड़े-बड़े स्तर पर यज्ञ होते थे उसी स्थान को तीर्थ मान लिया जाता था। प्रयाग, काशी, रामेश्वरम् आदि सभी क्षेत्रों में तीर्थों का उद्भव यज्ञों से ही हुआ है। हमारे वेद शास्त्रों का पन्ना-पन्ना यज्ञ की महिमा से भरा पड़ा है जिनमें कहा गया है।

विश्व रिकार्ड की है तैयारी

यज्ञ की परम्परा को बचाए रखने और विकसित करने तथा सनातन संस्कृति को एक करने के उद्देश्य से इस वर्ष दिल्ली में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्य समाज ने सामूहिक रूप से यज्ञ करने हेतु दस हजार के करीब लोगों को एकत्र कर, एक समय, एक स्थान और एकरूपता में ढालने के लिए यज्ञ करने का निर्णय लिया है। यज्ञ का यह विराट स्वरूप भारत के इतिहास में अपने आप में एक ऐसा ऐतिहासिक उदाहरण होगा जिसमें समस्त भारत के याज्ञिक उत्तर से दक्षिण तक और पूर्वोत्तर से लेकर पश्चिम तक के आर्यजन भाग लेंगे।......

यज्ञ से परमात्मा प्रसन्न होते हैं। माना जाता है यज्ञ एक धार्मिक क्रिया है जो ब्रह्माण्ड की "महान शक्ति" परमपिता परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ने की कोशिश करती है यानि समस्त सनातन संस्कृति का ईश्वर की उपासना का एक ही ढंग यज्ञ था।

किन्तु आज यह गौरवशाली परम्परा विलुप्त सी हो गयी है। इस कारण यज्ञ की इस परम्परा को बचाए रखने और विकसित करने तथा सनातन संस्कृति को एक करने के उद्देश्य से इस वर्ष दिल्ली में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्य समाज ने सामूहिक रूप से यज्ञ करने हेतु दस हजार के करीब लोगों को एकत्र कर, एक समय, एक स्थान और एकरूपता में ढ़ालने के लिए यज्ञ करने का निर्णय लिया है। यज्ञ का यह विराट स्वरूप भारत के इतिहास में अपने आप में एक ऐसा ऐतिहासिक उदाहरण होगा जिसमें समस्त भारत के याज्ञिक उत्तर से दक्षिण तक और पूर्वोत्तर से लेकर पश्चिम तक के आर्यजन भाग लेंगे। एक स्थान पर वैदिक काल के बाद समस्त भारत के

– शेष पृष्ठ 3 पर

वेद-स्वाध्याय

भूमि-माता की महती महिमा

वाजस्य नु प्रसवे मातर महीमदिति नाम वचसा करामहे। यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश तस्या नो देवः सविता धर्म साविषत् । यजु. 18/30
ऋषि : **देवाः।।** देवता - **राज्यवानात्मा।।** छन्दः **स्वराड्जगती।।**

शब्दार्थ - अदितिं नाम = अदिति नाम **महीं मातरम्** = महान् भूमि माता को **वाजस्य प्रसवे नु** = अन्न, बल, ज्ञान आदि की उत्पत्ति के लिए ही हम **वचसा** = वाणी द्वारा **करामहे** = अभिमुख करते हैं, माता बनाते हैं। **यस्याम्** = जिस अदिति में **इदं विश्वं भुवनम्** = ये सब-के-सब व्यक्ति और वस्तुएं **आविवेश** = समाई हुई हैं, **तस्याम्** = उसी में, उसी के प्रति **सविता देवः** = प्रेरक प्रभु **नः धर्म** = हमारे धर्म, कर्त्तव्य की **साविषत्** = सदा प्रेरणा करें।

विनय- भूमि-माता कोई काल्पनिक वस्तु नहीं है। यह 'राज्यवान् आत्मा' है, राष्ट्र है। यह माता राष्ट्र की, भूमि की, सब वयक्तियों की सामूहिक आत्मा है। इसका देह राष्ट्र-शरीर है। तनिक अनन्त व्यक्ति भेदों को भूलकर हम अपनी दृष्टि को विशाल बनाकर देखें, सम्पूर्ण भूमि को एक अ-खण्डित (अ-दिति), समष्टि रूप में देखें तो हमें यह 'अदिति' नाम अपनी माता दीख जाएगी। तब हमें दीखेगा कि भूमिभर के सब मनुष्य, पशु-वृक्ष आदि व्यक्ति, भूमिभर की सब सम्पत्तियां, सब वस्तुएं इसी अदिति में समाई हुई हैं। इससे बाहर कुछ नहीं है। इसलिए हम व्यक्तियों के सब वैयक्तिक सुख भी, सब 'वाज', सब अन्न-बल-ज्ञान आदि वस्तुएं भी, हमें उस समष्टि-रूपिणी एकात्मा अदिति माता की उपासना के बिना नहीं मिल सकतीं, अतः आओ हम उस महती अदिति माता को अपने अभिमुख करें, उसे एक वाणी से अपनी माता कहके पुकारें, परस्पर चर्चा और प्रचार से उसकी भावना अपने में जगाएं तभी हम अपने वैयक्तिक बल, ज्ञान आदि की उन्नति पा सकेंगे। सर्वप्रेरक प्रभु भी उसी समष्टिरूप अदिति में हमारी धारणा को उत्पन्न करें और उसके प्रति हमारा जो धर्म है उसकी हममें प्रेरणा करते रहें, उस समष्टि में एक होकर जो हमारा कर्त्तव्य है, जो हमारा धर्म है उसे सदैव सुझाते रहें। यदि प्रभु हममें इस धर्म की प्रेरणा न करेंगे या हम किसी अन्य कारण से इस महान् अदिति माता की उपासना न कर सकेंगे तो हम अपने अन्न-बल-ज्ञान-सम्पत्ति को भी कभी प्राप्त न कर सकेंगे। इसलिए है सवितः! तुम हमें उस अपनी मही माता के प्रति हमारे धर्म की प्रेरणा करते रहो।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

श्राद्ध पूर्वजों का कैसा सम्मान!

....एक तरफ तो ये माना जाता है कि पुनर्जन्म होता है, मतलब कि घर के बुजुर्ग मरने के बाद अगले जन्म में कहीं पैदा हो गए होंगे। दूसरी तरफ ये भी मानेंगे कि वे अंतरिक्ष में लटक रहे हैं और खीर पूड़ी के लिए तड़प रहे हैं क्या यह अंधविश्वास नहीं है .....

एक पंक्ति में एक छोटा वाक्य है कि आत्मा अजर-अमर है। शरीर जन्म लेता है और अंत में महायात्रा पर निकल जाता है। यह जीवन का एक ऐसा कटु सत्य है जिसे प्रत्येक व्यक्ति जानता है किन्तु इसके बावजूद भी अंधविश्वास की एक दुनिया है जो कहती कि पाखंड भी अजर है। इस अलग दुनिया के अपने-अपने पाखंड और अंधविश्वास है जो परम्पराओं के नाम पर और भय के आधार पर खड़े किये गये हैं। हर वर्ष आश्विन मास में पितृपक्ष एक ऐसा चरण है जिसमें आत्मा को तृप्त करने की और पितरों को खुश करने की क्रिया का कार्य होता है। पूर्वजों के सम्मान के नाम पर यह रस्म बड़े सम्मान से अदा की जाती है जिसे श्राद्ध कहा जाता है। इस माह में कर्मकांडी पंडित इस महाअभियान में व्यस्त हो जाता है।

कर्मकांडी जमात का प्रचार है कि श्राद्ध के महीने में परलोक सिधार चुके पितर अपनी संतान को आशीर्वाद देने पृथ्वी पर आते हैं, ये अदृश्य अपनी संतान या पीढ़ी को देखते हैं आनंद मनाते हैं। स्वादिष्ट पकवान खाते हैं और चले जाते हैं। ये पितर पशु-पक्षी बनकर कई रूप में आते हैं पर कर्मकांडी पंडितों के अनुसार अधिकांश कौवे ही बनकर आते हैं। इस मौसम में दान, ब्राह्मण भोजन आदि का बड़ा महत्त्व बताया जाता है। आजकल कुछ लोग अपने पित्तरों को खुश करने के लिए आधुनिक संसाधनों का दान भी करने लगे हैं। मतलब पितरों को गर्मी न लगे उसके लिए एसी, ठंडा पानी पिए इसके लिए फ्रिज, वाशिंग मशीन से लेकर मोबाइल तक दान कर रहे हैं।

वैसे हमारे धार्मिक शास्त्र कहते हैं कि यह शरीर तो सिर्फ एक चोला है, इन्सान का पुनर्जन्म होता है, मृत्यु अटल सत्य है तो उसके बाद जीवन भी उतना ही अटल सत्य है अब प्रश्न यही है कि जब मृत्यु के बाद जीवन है तो फिर कौन और कैसे भटक रहा है जिसका मैं श्राद्ध करूँ ? और अगर जन्म नहीं लिया तो मतलब आत्मा की मोक्ष प्राप्ति हो गयी तो फिर आधुनिक संसाधनों से लेकर भोजन तक किसे और क्यों प्रदान किया जा रहा है? अगर आत्मा ने जन्म ले लिया तो वह भी मेरे जैसे इन्सान होंगे कहीं ऐसा तो नहीं जब मैंने जन्म लिया मेरे पिछले जन्म का बेटा मेरा अभी तक श्राद्ध कर रहा हो?

क्या ऐसा हो सकता है कि कैलकुलेटर से नम्बर डायल कर हम किसी को फोन मिला देंगे? यदि नहीं तो फिर स्थूल शरीर छोड़ चुके लोगों के लिए बनी व्यवस्था, जीवित प्राणियों पर कैसे काम कर रही हैं? किन्तु सदियों से पंडे-पुजारी अपनी कुटिल बुद्धि का प्रयोग कर स्वयं को देवता एवं पूजयनीय बताते हुए अपनी सेवा कराते आ रहे हैं। इनका कहना है कि पितृपक्ष के दौरान कुछ समय के लिए यमराज पितरों को आजाद कर देते हैं ताकि वे अपने परिजनों से श्राद्ध ग्रहण कर सकें।

सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी श्राद्ध के असल रूप को प्रकट करते हुए पितृयज्ञ के दो भेद बताये हैं एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्राद्ध यानि जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय उस को श्रद्धा और जो श्रद्धा से कर्म किया जाय उसका नाम श्राद्ध है तथा जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पिता प्रसन्न हों उसका नाम तर्पण है। परन्तु यह जीवितों के लिये है। मृतकों के लिये नहीं है। किन्तु इसके विपरीत पितृपक्ष के दौरान हमारे घरों में कई तरह के स्वादिष्ट पकवान बनाए जाते हैं। उन पकवानों को पत्तों पर सजा कर रखते हैं, जिन्हें कुछ देर बाद कौए आ कर खा लेते हैं। तब उनकी आत्मा को शांति मिलती है वरना पूरा साल घर में परेशानी रहती है।

ऐसा न करने से यदि पूर्वज नाराज हो गए तो उन्हें जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे धनहानि, संतान पक्ष में समस्याएं, बने काम बिगड़ जाते हैं इत्यादि। शास्त्रों का हवाला दे देकर धर्मगुरुओं और कर्मकांडी लोगों ने हजारों सालों से यह बात आमजन के दिमाग में बैठा रखी है, उनके मन में आत्माओं का डर पैदा कर रखा है, जिसका वे हजारों वर्षों से फायदा उठा रहे हैं।

विचारहीन समाज में जागरूकता की कमी के कारण कभी सच जानने का प्रयास नहीं किया जाता अतः नुकसान का डर लोगों में इस कदर फैला है कि वे किसी भी तरह का खतरा मोल लेना ठीक नहीं समझते, न ही किसी भी वैज्ञानिक तर्क को स्वीकार करते हैं। एक तरफ अशुभ होने का भय तो दूसरी तरफ सांसारिक सुखों की तलाश में दिखावा करने के हथकंडे सहज ही अपना लेते हैं। चाहे वह कौओं को खाना खिलाना हो या ब्राह्मणों में देवता के प्रवेश की बात हो। लोग सवाल और तर्क करने के बजाय जैसे चल रहा है वैसे ही स्वीकार कर लेने को उचित समझते हैं, जिसे एक तरह की मूर्खता और अंधविश्वास ही कहेंगे।

पढ़े-लिखे और शिक्षित परिवारों में ऐसी मूर्खतापूर्ण और विरोधाभाषी चीज सिर्फ विश्वगुरु के पास ही मिल सकती है। एक तरफ तो ये माना जाता है कि पुनर्जन्म होता है, मतलब कि घर के बुजुर्ग मरने के बाद अगले जन्म में कहीं पैदा हो गए होंगे। दूसरी तरफ ये भी मानेंगे कि वे अंतरिक्ष में लटक रहे हैं और खीर पूड़ी के लिए तड़प रहे हैं क्या यह अंधविश्वास नहीं है यदि आपको श्रद्धा से श्राद्ध करना है तो माता-पिता या परिवार का कोई बुजुर्ग आपके साथ रहता है तो आप सच्चे दिल से उनकी सेवा करिये। पारिवारिक विषयों पर उनसे सलाह लें। उनका सम्मान करें। बुजुर्गों द्वारा दिए गये आशीर्वादों में बहुत शक्ति होती है। जब आपकी संतान आपको अपने माता-पिता की सेवा करते हुए देखेगी तो वह भी आपकी सेवा करेगी।

परिवार और समाज के बुजुर्ग लोगों की सेवा सर्वोत्कृष्ट मानवीय कार्य है। सेवा हमेशा कृतज्ञता और सद्भावना की सुगंध समाज को तृप्त करती है। ध्यान रखिये! श्रद्धा, कृतज्ञता और सेवा हमारे धार्मिक जीवन का मेरुदण्ड है। जो संतानें श्रद्धापूर्वक अपने माता-पिता तथा बुजुर्गों की सेवा करती हैं उन्हें सुख, समृद्धि, यश और कीर्ति की प्राप्ति होती है न कि मृतकों के नाम पर किये श्राद्ध से।

- सम्पादकीय

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सामाजिक – नैतिक परम्पराओं पर प्रहार

...भारत में कानून बदल रहे हैं। पिछले दिनों ही अदालत ने समलैंगिकों को मान्यता दी है। अब धारा 497 को भी असंवैधानिक घोषित कर दिया गया है। किन्तु यदि हम भारतीय समाज का मनोविश्लेषण करें तो एक सहज सवाल यह खड़ा होता है कि क्या वाकई हम ऐसे आधुनिक कानून के लिए तैयार हैं? क्या हमारा समाज इस कानून को स्वीकार कर पाएगा? क्या शादियों को बनाए रखने के लिए कोई कानून हो सकता है,...

हमारी नैतिक और सामाजिक परम्पराओं में विवाह को सात जन्मों का बंधन माना जाता है, जहाँ अग्नि के सात फेरे लेकर दो तन, दो मन एक पवित्र बंधन में बंधते हैं। दो लोगों के बीच यह एक सामाजिक या धार्मिक मान्यता प्राप्त मिलन है। जिसे अब शादी भी कहा जाता है। सभी सभ्य समाजों में इसे एक पवित्र कर्त्तव्य भी समझा जाता है। किन्तु इन दिनों आई.पी.सी. की धारा 497 चर्चाओं में बनी हुई है। इस धारा के तहत अगर कोई शादीशुदा पुरुष किसी शादीशुदा महिला के साथ रजामंदी से संबंध बनाता है तो उस महिला का पति एडल्टरी के नाम पर इस पुरुष के खिलाफ केस दर्ज कर सकता है लेकिन वह अपनी पत्नी के खिलाफ किसी भी तरह की कोई कार्रवाई नहीं कर सकता था।

कुछ समय पहले केरल निवासी जोसफ शिन ने धारा 497 के खिलाफ कोर्ट में याचिका दायर कर इसे निरस्त करने की गुहार लगाई थी। याचिका में कहा गया है कि धारा 497 के तहत व्यभिचार को अपराध की श्रेणी में तो रखा गया है लेकिन ये अपराध महज पुरुषों तक ही सीमित है। इस मामले में पत्नी को अपराधी नहीं माना जाता जबकि अपराध साझा है तो सजा भी साझी होनी चाहिए।

अब सुप्रीम कोर्ट ने अडल्ट्री यानी व्यभिचार को अपराध बताने वाले कानूनी प्रावधान को असंवैधानिक करार दिया है। मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा, जस्टिस ए.एम. खनविलकर, जस्टिस आर.एफ. नरीमन, जस्टिस इंदू मल्होत्रा और जस्टिस चंद्रचूड़ ने अपने फैसले में कहा कि व्यभिचार से संबंधित भारतीय दंड संहिता यानी आई.पी.सी की धारा 497 संविधान के खिलाफ है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि ये कानून मनमाना है और समानता के अधिकार का स्पष्ट उल्लंघन है और स्त्री की देह पर उसका अपना हक है। इससे समझौता नहीं किया जा सकता है। यह उसका अधिकार है। उस पर किसी तरह की शर्तें नहीं थोपी जा सकती हैं।

अब इसके बाद समाज का कितना स्वरूप बदलेगा साफ तौर पर अभी कहा नहीं जा सकता, हाँ इशारा किया जा सकता है या भविष्य की कल्पना कि आगे आने वाला समाज ऐसा होगा। क्योंकि अभी तक सामाजिक नजरिये से एक पुरुष और महिला के बीच रिश्ता शादी के अनुरूप ही समझा जाता था। किन्तु इस रिश्ते को क्या कहें? शायद ''सहावासी-रिश्ता'' यानि लोग जब चाहें किसी से भी अनैतिक संबन्ध स्थापित कर सकते हैं। भले ही कानून की इस धारा की समाप्ति को एक तबका आधुनिकता से जोड़ रहा हो या महिला सशक्तिकरण से किन्तु ये भी नहीं नाकारा जा सकता कि यह रिश्ते समाज को तोड़ने का कार्य करेंगे।

हाल ही में देखें तो भारत में कानून बदल रहे हैं। पिछले दिनों ही अदालत ने समलैंगिकों को मान्यता दी है। अब धारा 497 को भी असंवैधानिक घोषित कर दिया गया है। किन्तु यदि हम भारतीय समाज का मनोविश्लेषण करें तो एक सहज सवाल यह खड़ा होता है कि क्या वाकई हम ऐसे आधुनिक कानून के लिए तैयार हैं? क्या हमारा समाज इस कानून को स्वीकार कर पाएगा? क्या शादियों को बनाए रखने के लिए कोई कानून हो सकता है, जो विवाह को टूटने से बचाए और यदि टूटने से नहीं बचा सकता तो कोई ऐसा करार जो दोनों ही पक्षों के लिए राहत देने वाला हो। क्योंकि जब भी शादी टूटती है तो सबसे ज्यादा असर निराश्रित की देख-रेख पर ही पड़ता है। जो भी सदस्य पैसा नहीं कमाता है, उसके लिए जीवन जीना मुश्किल हो जाता है।

देखा जाये इस कानून की समाप्ति को महिला सशक्तिकरण से जोड़कर देखा जा रहा है। किन्तु मुझे लगता है इस कानून की समाप्ति से उन्हें कमजोर किया गया है क्योंकि अधिकांश महिलाएं वित्तीय रूप से कमजोर होती हैं, वे लंबी अदालती लड़ाई का भार वहन नहीं कर पाती हैं। अब उनके सहवासी होने का आरोप संबंध विच्छेद में अनाप-शनाप मुआवजे की मांग को नहीं मानना पड़ेगा

अब कानून को हटा दिए जाने के बाद से ये चर्चा शुरू हो गई है कि इससे देश में शादियां खतरे में पड़ जाएंगी, जो जिसके साथ चाहे संबंध बना लेगा या फिर कानून के हट जाने से भारत में शादियां टूटने लगेंगी? पत्नियाँ पतियों की कद्र करनी छोड़ देगी ऐसे सवाल समाज में खड़े हो रहे हैं लेकिन मेरा मानना है जितना कहा जा रहा है उतना तो नहीं होगा। क्योंकि हमारे यहाँ शादी विवाह जैसे पवित्र रिश्ते सिर्फ लड़की या लड़के के बीच नहीं बल्कि दो परिवारों के बीच स्थापित होते हैं यही सफल विवाहित जीवन मनुष्य के सुख की एक आधारशिला भी है।

दूसरा भारतीय समाज में पति हो या पत्नी अपने शारीरिक सुख के बजाय परिवार और अपने बच्चों के अच्छे भविष्य पर ध्यान देते हैं यानि वैवाहिक जीवन में संतान का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है और पति-पत्नी के बीच के संबंधों को मधुर और मजबूत बनाने में बच्चों की भूमिका रहती है। वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति पूरा समर्पण और त्याग होता है। एक-दूसरे की खातिर अपनी कुछ इच्छाओं और आवश्यकताओं को त्याग देना या समझौता कर लेना रिश्तों को मधुर बनाए रखने के लिए जरूरी होता है यही वैवाहिक जीवन का मूल तत्त्व होता है। हाँ कुछ असंस्कारी लोग इस कानून की समाप्ति का स्वयं की वासनाओं की पूर्ति के लिए लाभ जरूर उठाएंगे पर ऐसे लोग तो समाज में पहले से ही मौजूद रहे हैं। – ***राजीव चौधरी***

प्रथम पृष्ठ का शेष

मानव कल्याण एवं .....

आर्यजन इस तरह के आयोजन में इससे पहले शायद ही एकत्र हुए होंगे।

इसकी आवश्यकता इसलिए भी महसूस हुई कि आज वर्तमान में यदि देखें तो बौद्ध धर्म को मानने वाले विश्व में पचास करोड़ से अधिक लोग हैं जो अपने बौद्ध पर्व को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं, एक जगह एकत्र होकर अपनी धार्मिक एकता का प्रदर्शन भी करते है। इसी तरह इस्लाम मत को मानने वाले लोग ईद के मौके या प्रत्येक शुक्रवार को अपनी वेश-भूषा परम्परागत ढंग से पहनकर अपने-अपने घरों से दरगाह या मस्जिद परिसर में नमाज के लिए एकत्र होते हैं तथा एक क्रम एक पंक्ति में अपनी इबादत करते दिखते हैं। शायद यह इनकी धार्मिक शक्ति का प्रदर्शन होता है और इसाई मत को मानने वाले लोग भी प्रत्येक रविवार को जमा होते हैं तथा एक साथ सस्वर अपनी प्रार्थना करते हैं।

इन सबके विपरीत जब हम अपने सनातन धर्म को देखते हैं तो ऐसा कुछ देखने को नहीं मिलता। कुछ दिवसों जैसे मंगलवार या शनिवार या फिर उत्सवों या त्योहारों आदि में लोग मंदिरों में एकत्र तो होते हैं लेकिन घंटों अपनी-अपनी प्रार्थना की बारी आने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। लम्बी-लम्बी कतारें मंदिरों में आसानी से देखी जा सकती हैं। इस तरीके में न तो हमें समरसता देखने को मिलती, न एकरूपता और न ही एकता दिखाई देती है।

यह सोचने वाली बात है कि जिनकी आस्थाओं की जड़ें विदेशों में हैं वे प्रार्थना शैली के नाम पर एकत्र हैं और जिनकी जड़ें हजारों वर्ष पुरानी परम्पराओं में विकसित हुई वे सब अलग-अलग तरीके लिए बैठे हैं। आखिर इसका उपाय क्या है? धार्मिक दृष्टि से कम होती एकता का इलाज क्या है? आखिर धार्मिक रूप से प्रार्थना के समय लोगों में सामाजिक एकता, धार्मिक समानता, प्रार्थना की एकरूपता कैसे स्थापित हो?

आज यह विचारणीय प्रश्न है कि एकरूपता की ये जड़ आखिर कहाँ है और उसे कैसे सींच सकते हैं। जिसके अनुसार हम एक समय एक स्थान पर बिना किसी भेदभाव के, बिना किसी कथित ऊंच-नीच के और गरीबी-अमीरी से अलग हटकर इस कार्य में नींव के पत्थर से लेकर आधार स्तम्भ पर टिकी छत तक का काम कर सकें। इसका एक ही उपाय है और वह सामूहिक एकरूप यज्ञ।

स्वयं सोचिये क्या नजारा होगा जब एक स्थान पर हजारों लोग उमड़ेंगे। यज्ञ का महाआयोजन होगा और हजारों कंठों से वेद की वाणी एक साथ वायुमंडल में गुंजायमान होगी। इस यज्ञ को एक विशाल वैश्विक नाम देना होगा वह नाम जो जोड़ कर रखेगा समस्त सनातन वैदिकधर्म को, मिटायेगा जातीयता के भेद को, रक्षा करेगा धर्म और समाज की जो समस्त संसार को एक ही सन्देश देगा कि हमारी वंशावली ऋषि परिवारों से आरम्भ होती है। अपने पूवर्जों का धर्म, उनकी दी संस्कृति, परम्पराओं का स्वैच्छिक पालन उपासना की एकरूपता यज्ञ के अलावा भला क्या हो सकती है?

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत वाक्य अभ्यास: पूर्वकालिक कत्वा व ल्यप् प्रत्यय (69)

गतांक से आगे....

समानकर्तृकयो: पूर्वकाले - वाक्य में दो क्रियाओं का समान कर्ता होने पर के होने पर पूर्वकाल वाली क्रिया से कत्वा प्रत्यय होता है। यदि उस धातु से पूर्व अव्यय या उपसर्ग आदि हों तो कत्वा के स्थान पर ल्यप् हो जाता है (समासेऽनञ्पूर्वे कत्वो ल्यप) इससे अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं आता व दोनों ही स्थितियों में शब्द के अव्यय होने से रुप नहीं चलते। उदाहरण- यज्ञदत: भुक्त्वा विद्यालयं गच्छति। यहां खाना व जाना दो क्रियाएं हो रही हैं जिनका एक ही कर्ता यज्ञदत्त है अत: पूर्वकाल में घटित होने वाली भुज् (खाना) क्रिया में कत्वा प्रत्यय होकर वाक्य का अर्थ हुआ "यज्ञदत्त खाकर विद्यालय जाता है'।

2) शिष्य: स्नात्वा पाठं पठति। शिष्य स्नान करके पाठ पढता है।
3) स: मित्रं दृष्ट्वा ग्रामाद् आयाति। वह मित्र को देखकर गांव से आता है।
4) कृषक: दुग्धं दुग्ध्वा क्षेत्रं प्रति गच्छति। किसान दूध दुहकर खेत की ओर जाता है।
5) बालक: वाक्यम् उक्त्वा लिखति। बालक वाक्य को बोल कर लिखता है।
6) परीक्षाम् उत्तीर्य रमा मोदते । परीक्षा को उत्तीर्ण करके रमा प्रसन्न होती है।
7) पुत्रम् आहूय पिता पृष्टवान्। पुत्र को बुलाकर पिता ने पूछा।
8) देवदत्त: वेदम् अधीत्य गृहस्थी भवति। देवदत्त वेद को पढकर घर वाला बनता है।
9) वणिक् धनं संगृह्य दानं ददाति। व्यापारी धन को इक्टठा करके दान देता है।

- ***आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय,*** **मो. 9899875130**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली

25, 26, 27, 28 अक्तूबर, 2018 तद्नुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ वि०सं०२०75

विभिन्न आयोजित कार्यक्रमों की संक्षिप्त रूपरेखा

गुरुवार, दिनांक 25 अक्टूबर, 2018

ओ३म् ध्वजारोहण

प्रात: 10.00 बजे

संकल्प :

ओ३म् ध्वजा फहरे घर-घर पर

-: उद्घाटन समारोह :-

प्रात: 10.30 बजे से 1.30 बजे

मानव उत्थान एवं विश्व शान्ति के लिए समर्पित सतत आन्दोलन - आर्यसमाज

1. मानवीय मूल्यों का प्रेरक - आर्यसमाज
2. आर्यसमाज की स्थापना : नए युग का आरम्भ
3. आज के जीवन में आर्यसमाज की प्रासंगिकता
4. आर्यसमाज का गौरवशाली इतिहास - क्रान्तिकारी परिवर्तन एवं प्रेरणा

-: वेद सम्मेलन :-

दोपहर 2 से 4.00 बजे तक

विश्वशान्ति एवं मानव निर्माण का एकमात्र मार्ग - वेद

1.मानवीय सम्बन्ध और वेद (धारा 377 की समाप्ति - आखिर ये सन्देश किसके लिए?) **प्रेरणा :** ईश्वर प्रदत्त प्राकृतिक नियमों तथा मानवोचित व्यवहार का आधार वेद।

2. वेद वाणी को जन वाणी बनाया महर्षि दयानन्द ने (धन्य है तुमको हे ऋषि) **प्रेरणा :** वेद किसी काल, वर्ग व स्थान विशेष के लिए नहीं अपितु सार्वभौमिक, सार्वकालिक व सार्वजनीन है।

3. वेद और विज्ञान।

प्रेरणा : समस्त भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान का आधार है वेद।

4. वैश्विक आतंकवाद का समाधान - केवल वेद के द्वारा **प्रेरणा :** मनुर्भव का सन्देश देते हुए सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण व सुख-शान्ति का आधार है वेद।

ले चलें शिखर की ओर 'लघु नाटिका'

-:शिक्षा एवं संस्कृति सम्मेलन:-

सायं. 4.30 से 7.30 बजे तक

आर्यसमाज के कार्यकर्ता बनें - अंध विश्वासों के खिलाफ आवाज बुलन्द करें

1. अंधविश्वास से अपार हानियाँ-ऐतिहासिक परिपेक्ष में। **प्रेरणा :** पाप क्षमा की भ्रान्ति फैलाने वाले पूजापाठ से मुक्त कराएँ समाज को।
2. वर्तमान में बढ़ रहे अन्धविश्वास के निवारण में आर्य समाज का दायित्व। **प्रेरणा :** धर्म के नाम पर होने वाले व्यापार का विरोध योजनाबद्ध रूप से करके जनता को गुमराह होने से बचाएं।
3. धार्मिक भ्रष्टाचार-निरोधक कानून की आवश्यकता। **प्रेरणा :** आर्यसमाज के कार्यकर्ता बनें - अन्धविश्वासों के खिलाफ आवाज बुलन्द करें।

आर्य वीर सम्मेलन

सायं 7 से 9 बजे तक

राष्ट्र और आर्यसमाज का उज्ज्वल भविष्य : आर्य वीर दल

1. युवा कार्यकर्ता निर्माण
2. वर्तमान चुनौतियां एवं आर्य वीर दल
3. आर्य वीर एवं सेवा कार्य
4. आर्य वीरांगनाओं का दायित्व
5. आर्य वीर दल की प्रचार योजना: समायोजन एवं कार्यक्रम
6. आर्य वीर दल का गौरवशाली इतिहास
7. आर्यवीर दल - आर्यसमाज की सशक्त भुजा

भजन एवं गीत संध्या

रात्रि : 9 से 11 बजे

आर्यसमाज के युवा संगीतज्ञों द्वारा आकर्षक प्रस्तुति महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्यमाज, प्रेरणा, ईश्वर भक्ति एवं शान्तिगीत।

शुक्रवार 26 अक्टूबर, 2018

-: निरन्तर क्रियाशील आर्यसमाज :-

प्रात: 10:30 से 11:30 बजे

आर्यसमाज की उन्नति, विस्तार, आधुनिकीकरण और भविष्य की चुनौतियों एवं आवश्यकताओं को देखते हुए चलाई गई नई योजनाओं का परिचय

-: सांस्कृतिक एवं सामाजिक संचेतना सम्मेलन:-

प्रात: 11.30 बजे से 1.30 बजे

सामाजिक एवं पारिवारिक व्यवस्थाओं के बिगड़ते ताने-बाने के विषय में चिन्तन

1. अपसंस्कृति का विस्तार-विलुप्त होते वैदिक संस्कार **प्रेरणा :** अपनी सन्तानों में डालें शुभ संस्कारों के बीज (मदर्स-डे, फादर्स-डे, वर्ष में केवल एक दिन के लिए नहीं)
2. जातिवाद - मानवता पर कलंक (समग्र हिन्दू समाज के चिन्तन का विषय) **प्रेरणा :** वैदिक वर्ण व्यवस्था में जातिवाद के अभिशाप से बचने के लिए कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था अपनाएं
3. दिशाहीन सोशल मीडिया समाज व राष्ट्र के लिए घातक
4. बिना सन्तान अथवा एकाकी सन्तान से परिवार की संकल्पना - समाज व राष्ट्र के लिए घातक **प्रेरणा :** समृद्ध एवं मजबूत परिवार का निर्माण करें।
5. संस्कृति का आधार - संस्कृत भाषा। **प्रेरणा :** संस्कृति को जानने के लिए संस्कृत के पठन-पाठन की योजना प्रत्येक आर्यसमाज अपनाए।

-: आर्य महिला सम्मेलन :-

दोपहर 2 से 4.00 बजे तक

नारी की समाज निर्माण में विशिष्ट भूमिका को लेकर विस्तार से चिन्तन

1. आर्य समाज के विस्तार में नारी की अहम् भूमिका। **प्रेरणा :** स्त्री विमर्श के नाम पर नर-नारी के मध्य खाई न बढ़ने दें।
2. नारी सम्मान के क्षेत्र में आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका। **प्रेरणा :** एक आन्दोलन के रूप में करना होगा भ्रूण हत्या का विरोध।
3. हाउस वाईफ नहीं होममेकर है नारी (गृहिणी गृहमुच्यते) **प्रेरणा :** अपने परिवार को इस अभिशाप से बचाएं।
4. परिवार, समाज व राष्ट्रोत्थान की धुरी नारी। **प्रेरणा :** महर्षि दयानन्द द्वारा बताए मार्ग से नारी उत्थान के कार्यों को आगे बढ़ाएं।
5. दो पाटों के बीच पिसती आज की नारी।
6. वैदिक पारिवारिक व्यवस्था को ध्वस्त करने के गम्भीर षड्यंत्र (लिव - इन - रिलेशनशिप, समलैंगिकता को स्वीकृति, एकांकी सन्तान की प्रवृत्ति तथा बढ़ते हुए तलाक) **प्रेरणा :** वर्तमान जीवन शैली में परिवर्तन लाकर परिवार के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

-: विश्वशान्ति एवं मानव कल्याण एकता महायज्ञ :-

(हजारों यज्ञ प्रशिक्षित याज्ञिकों द्वारा)

सायं 4 से 6 बजे

भावना : घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ

यज्ञ के शोध परिणामों का प्रदर्शन

1. यज्ञ से सम्बन्धित वैज्ञानिक शोध के परिणाम
2. आर्य समाज की शोध टीम का परिचय
3. महर्षि दयानन्द का अन्तिम आह्वान 'लघु नाटिका'
4. महाशय धर्मपाल जी यज्ञ का सन्देश - बच्चों के नाम

लघु नाटिका : सायं 6 बजे

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन के अन्तिम दृश्य पर आधारित लघु नाटिका

-:महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

सायं. 7 से 9 बजे

महर्षि दयानन्द जी के उत्तमतम व्यक्ति को और निकटता से देखें और अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारित करें।

1. महर्षि दयानन्द के स्वप्न एवं हमारे कर्त्तव्य तथा दायित्व। **प्रेरणा :** महर्षि दयानन्द के मिशन से जुड़कर स्वयं के जीवन का निर्माण करें एवं अन्यों को आर्य बनाने का संकल्प लें।
2. महर्षि जी की कालजयी कृति - सत्यार्थ प्रकाश **प्रेरणा :** व्यक्तिगत जीवन प्रबन्धन, समाज प्रबन्धन एवं राष्ट्र निर्माण के सूत्रों का ज्ञान व प्रचार-प्रसार
3. महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदत्त मानव कल्याण के स्वर्णिम सूत्र (आर्यसमाज के 10 नियम) **प्रेरणा:** मानवमात्र के सर्वांगीण विकास के आधार हैं ये दस नियम।
4. महर्षि दयानन्द और मनुस्मृति। **प्रेरणा:** मानव समाज के प्रथम संविधान मनुस्मृति को महर्षि ने पूर्ण प्रामाणिकता दी।

26 अक्टूबर, 2018

कवि सम्मेलन

रात्रि 9 से 11 बजे

राष्ट्र एवं मानव जाति के समक्ष उपस्थित समस्याओं का काव्यमय चिन्तन एवं आह्वान

शनिवार
27 अक्टूबर, 2018

–: राष्ट्र चिन्तन सम्मेलन :–

प्रातः 10.30 बजे से 1.30 बजे

राष्ट्र की वैदिक अवधारणा

भावना : राष्ट्र एवं विश्व के समक्ष उपस्थित जन समस्याओं की चर्चा एवं समाधान

1. धर्मान्तरण : संस्कृति एवं राष्ट्र को विघटित करने का विश्व व्यापी षड़यन्त्र। **प्रेरणाः** परिवारों में धर्म, दर्शन एवं संस्कृति की शिक्षा द्वारा सनातन धर्म की महत्ता को प्रतिपादित किया जाए।
2. एकत्व ही श्रेयस्कर (एक देश, एक संविधान, एक समान नागरिक संहिता) **प्रेरणा** : राष्ट्र के संसाधनों एवं सुविधाओं का लाभ सभी नागरिकों को समान रूप से प्राप्त हो तथा सभी के लिए न्याय एवं दंड विधान समान हो।
3. जनसंख्या के सामाजिक असंतुलन के विस्फोटक परिणाम। **प्रेरणा** : जनसंख्या वृद्धि राष्ट्र के लिए घातक है। इसलिए जनसंख्या नियन्त्रण का कानून सभी के लिए समानरूप से लागू हो।
4. भारत व भारतीयता को नष्ट करने के प्रयास में अराष्ट्रीय तत्व। **प्रेरणाः** आतंकवादियों और राष्ट्रविरोधी तत्त्वों को दिया जाने वाला समर्थन व सहयोग राष्ट्रद्रोह की श्रेणी में लाया जाए।

–: विश्व आर्यसमाज सम्मेलन :–

दोपहर 2 से 4 बजे तक

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'–लक्ष्य–बढ़ते कदम समस्त विश्व से पधारे आर्यजनों का उद्बोधन

1. वेद की सार्वभौमिक शिक्षाएं ही विश्व शान्ति एवं सौहार्द का एक मात्र आधार। **प्रेरणाः** विश्व के समस्त देशों में वेद का सन्देश पहुँचाने का संकल्प लें।
2. विश्व के अन्य देशों के राष्ट्रीय उत्थान में आर्य समाज की भूमिका। **प्रेरणाः** अन्य देशों में आर्य समाज को पहुँचाने की योजना बनाकर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के स्वप्न को साकार करें। विश्व की समस्त आर्यसमाजों की गतिविधियों से परिचित होकर परस्पर कार्य करें।
3. ऊर्जा के गहराते वैश्विक संकट में वेदों की उपादेयता। **प्रेरणाः** ऊर्जा के वैश्विक संकट का निदान वेदों में वर्णित ऊर्जा के स्रोतों के माध्यम से ही सम्भव

आर्य वीर/वीरांगना दल व गुरुकुलों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन

सायं 4 से 6 बजे तक

(विभिन्न प्रान्तों से पधारे आर्य वीरों एवं गुरुकुलों द्वारा आकर्षक व्यायाम कलाओं का प्रदर्शन)

पथ संचालन, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, सामूहिक तलवार, सामूहिक भाला, नियुद्धम्, तलवार विशेष, भाला विशेष, आसन स्तूप, मलखम्भ, जिम्नास्टि, डोरी मल्खम्भ, कमाण्डो, कैलोजियम – आर्य वीरांगनाओं द्वारा, कल्लरी, विभिन्न वाद्य यन्त्र

आर्य परिवार सम्मेलन

सायं 4:30 से 6 बजे तक

आर्यसमाज को मजबूत करें आर्य परिवार

1. आर्य बने पूरा परिवार। **प्रेरणाः** आओ आर्यसमाज को अपना मित्र बनाएं तथा आर्यपरिवारों के आपसी सम्बन्धों को बढ़ावा दें।
2. हम आर्य दिखें भी। **प्रेरणाः** हम मन से, वाणी से और कर्म से आर्य धर्म को अपनाएं।
3. आर्य परिवार–धरती पर स्वर्ग। **प्रेरणाः** 'स्वर्ग कामो यजेत्' की भावना से ओतप्रोत होकर 'पंचमहायज्ञों' को जीवन मे अपनाएं।

–: लेजर शो :–

सायं 6:30 से 7:30 बजे

सृष्टि उत्पत्ति से आज तक की परिस्थितियां तथा भविष्य की दृष्टि एवं संकल्प

–: आर्यसमाज सेवा कार्य सम्मेलन:–

सायं 7 से 9 बजे तक

संसार का उपकार करना, आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य की मूल भावना के साथ आयोजित : सेवा कार्य पहुंचे घर–घर तक

1. आर्य समाज और इसका छठा नियम। **प्रेरणाः** प्रत्येक आर्यसमाज में सेवा कार्य ईकाई का गठन हो व समय–समय परसेवा कार्य किए जाएं।
2. आदिवासियों के योगक्षेम व गौरववद्धि के लिए खड़ा है आर्य समाज। **प्रेरणा** : प्रत्येक आर्यसमाज अपनी ओर से अ. भा. दयानन्द सेवाश्रम संघ से जुड़कर योगदान दे।
3. प्राकृतिक आपदाओं के समय बढ़ाओं हाथ–मिले आर्य समाज का साथ

विशिष्ट भजन संध्या

रात्रि : 9 से 11 बजे

रविवार
28 अक्टूबर, 2018

–: संकल्प सत्र :–

प्रातः 10 से 11 बजे

आओ संकल्प लें

सम्मेलन – हम सबमें आगे कार्य करने की प्रेरणा का संचार करे

समाज की उन्नति का
वेद (ज्ञान) के प्रचार का
स्वयं के उत्थान का
राष्ट्र के उत्थान का
संगठन की उन्नति का
ऋषिग्रन्थों के स्वाध्याय का

–: अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन :–
–: समापन सत्र :–

प्रातः 10:30 से 11:30 बजे

महर्षि दयानन्द जी के जन्म के 200 वर्ष (2024) एवं आर्यसमाज की स्थापना के 150 वर्ष (2025) के लक्ष्य को लेकर भविष्य की पूर्ण रूपरेखा की प्रस्तुति एवं आर्यसमाज के संगठन के प्रमुख कार्यकर्ताओं द्वारा संकल्प की अभिव्यक्ति एवं सम्मान

1 नवजागरण के पुरोधा – ऋषि दयानन्द का चिन्तन – हमारी शक्ति का प्रेरणा पुँज। **प्रेरणाः** महर्षि दयानन्द के आदर्शों का करें अनिवार्य रूप से पालन।
2. वैदिक सिद्धान्तों की दृढ़ता : जीवन निर्माण का उपाय। **प्रेरणाः** वैदिक सिद्धान्तों का दृढ़ता के साथ पालन करें।
3 वैदिक धर्म का संरक्षक – आर्य समाज। **प्रेरणा** : वैदिक धर्म को विश्व व्यापक बनाने के लिए आर्यसमाज को मजबूत करें।
4 व्यक्तिगत जीवन के उच्च मापदण्डों का प्रेरक – आर्य समाज। **प्रेरणा** : आर्य समाज के जीवन मूल्यों को जीवन में अपनाएं
5. राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में आवश्यक प्रस्ताव
6. आर्यसमाज के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा

प्रतिदिन होने वाले कार्यक्रम

ध्यान एवं योग साधना – योग साधना
प्रातः 5:15 बजे से 6:30 बजे तक
ध्येय– व्यक्तित्व विकास और जीवन में शान्ति के लिए ध्यान एवं योग को अपनायें

आर्य वीर दल शाखा – आर्य वीर दल
प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक
ध्येय– बालक–बालिकाओं को सुसंस्कारित करने हेतु ग्राम–ग्राम तक आर्यवीर दल की शाखा का विस्तार करें

पूर्णकालिक यज्ञ – लघु गुरुकुल
प्रतिदिन प्रातः 9:30 बजे से सायं 4:30 बजे तक

प्रातःकालीन संध्या एवं बृहद् यज्ञ
प्रातः 7:30 बजे से प्रातः 9:00 बजे तक
ध्येय–मानव जीवन की उन्नति एवं मोक्ष प्राप्ति – पंच महायज्ञों द्वारा

भजन, आध्यात्मिक प्रवचन एवं ध्यान
(मुख्य मंच से)
प्रातः 9:15 बजे से 10:00 बजे तक

सायंकालीन बृहद् यज्ञ, संध्या एवं ध्यान
(केवल 25 एवं 27 अक्टूबर 2018)
सायं 4:30 बजे से 5:30 बजे तक
ध्येय –संध्योपासना से करें आत्मिक उन्नति

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली–2018 : स्वर्ण जयन्ती पार्क पहुंचने का मार्ग

मैट्रो द्वारा – स्वर्णजयन्ती पार्क रोहिणी, जापानी पार्क के नाम से भी प्रसिद्ध है, यह दिल्ली के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है। आप दिल्ली मैट्रो के किसी भी स्टेशन से रिठाला या रोहिणी वैस्ट का टिकट लेवें तथा उतरकर सीधे सम्मेलन स्थल पर पहुंचें। 15 मिनट का पैदल मार्ग है, ई–रिक्शा अथवा बस सेवा का लाभ उठा सकते हैं।

बस द्वारा – पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से 183, 114 ; कनॉट प्लेस से (शिवाजी स्टेडियम) 990, 957, 994; उत्तम नगर से 879, 883 और बाहरी मुद्रिका; करनाल बाईपास से 883 और बाहरी मुद्रिका; आनन्द विहार बस अड्डे से : बाहरी मुद्रिका आई.एस.बी.टी. (कश्मीरी गेट) 114, 140, 183, 901, 982, 883; आउटर रिंगरोड पर से आप बाहरी मुद्रिका (बस रुट) लेवें तथा मधुबन चौक अथवा, हैदरपुर जल संयन्त्र निकट पैट्रोल पम्प के स्टैण्ड पर उतरें वहां से ओटो, ई–रिक्शा अथवा बस सेवा का लाभ उठाऐं।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली: विभिन्न हॉल में प्रतिदिन आयोजित होने वाले कार्यक्रम

हॉल नं. १
गुरुदत्त विद्यार्थी सभागार

प्रतिदिन विभिन्न आयु वर्गों हेतु प्रतियोगिताएं : इस हॉल में 5 वर्ष से लेकर सभी आयुवर्ग के आर्यजनों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है, जो कि अलग-अलग समय एवं वर्ग के अनुसार होगी।

हॉल नं. २
पं. रामचन्द्र देहलवी सभागार

शंका समाधान सत्र : इस हॉल में वेद सत्यार्थ प्रकाश, यज्ञ, ईश्वर, कर्मफल, सृष्टि उत्पत्ति, दर्शन, आदि विषयों पर अलग-अलग समय पर विभिन्न उच्चकोटि के विद्वानों के सत्र होंगे, जिनमें जिज्ञासुजन अपनी शंकाओं का समाधान पा सकेंगे।

हॉल नं. ३
स्वामी सत्य प्रकाश सभागार

विभिन्न विषयों पर चर्चा एवं सत्ता बिन्दु प्रस्तुतिकरण (पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन) : इस हॉल में वेद में विज्ञान, वेद में उपस्थित विभिन्न विषयों जैसे-सृष्टि विज्ञान, कृषि विज्ञान, यज्ञ चिकित्सा, यज्ञ विज्ञान, पाखण्ड खण्डन, वेदों के सम्बन्ध में भ्रान्तियों का निवारण, आर्यों का आदि देश, आर्य समाज के नियमों पर ख्याति प्राप्त विद्वानों एवं इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा चर्चा तथा प्रस्तुति की जाएगी।

हॉल नं. ४
शुक्रराज शास्त्री सभागार

विभिन्न भाषाएं एवं विदेश परिचय: इस हॉल में विभिन्न देशों में उपस्थित आर्य समाज के संगठन, गतिविधियों तथा वहां की संस्कृति का परिचय वहीं के आर्यजनों द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा। इसी हॉल में विभिन्न भारतीय तथा विदेशी भाषाओं के विद्वान आर्यसमाज की विचारधरा को अपनी-अपनी भाषा में प्रस्तुत करेंगे।

हॉल नं. ५
महात्मा नारायण स्वामी सभागार

२५-२६ अक्टूबर

'योग की सार्थकता महिलाओं/बच्चों/अभिभावकों के लिए' विषय पर विशेष चर्चा

बच्चों के लिए विशेष प्रकाशित अंग्रेजी साहित्य का परिचय

२७-२८ अक्टूबर :

द्वि दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

हॉल नं. ६
पं. आशानन्द सभागार

पं. आशानन्द जी मैजिक लालटेन (मूवी हॉल) : इस हॉल में प्रतिदिन प्रात: 10 बजे से रात्रि 11 बजे तक विचार टी.वी. द्वारा निर्मित आर्य समाज, महर्षि दयानन्द, विभिन्न महापुरुषों के जीवन, परिवार एवं समाजोपयोगी विषयों पर निर्मित विभिन्न वृत्तचित्रों, लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा।

हॉल नं. ७ : विशुद्धा सभागार

विश्वमार्यम् सभागार - विशुद्धा : इस हॉल में आर्य समाज की विचारधारा को विश्वव्यापी बनाने, विश्व में फैलाने, आर्य समाज के इतिहास, साहित्य को सुरक्षित रखने, विश्व भर में फैले आर्य समाज से जुड़े महानुभावों को एक दूसरे के निकट लाने के लिए आधुनिकतम तकनीकों का इस्तेमाल करके जिन योजनाओं का निर्माण किया गया है तथा जिनका लोकार्पण इसी ऐतिहासिक महासम्मेलन में किया जाना है उनके बारे में आगन्तुक आर्जनों को अलग-अलग समय में विभिन्न योजनाओं को अलग-अलग समय में विभिन्न योजनाओं को विस्तार से बताने के लिए आर्य समाज के युवा कार्यकर्ताओं द्वारा सत्ता बिन्दु प्रस्तुतिकरण (पी.पी.टी.) किया जाएगा।

इस हॉल में लोग स्वयं इंटरनेट का प्रयोग करके वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी (सन्दर्भ पुस्तकालय), अभिलेखागार, आर्य सूचना केन्द्र वैब पोर्टल एवं अन्य आकर्षक योजनाओं को स्वयं देख सकेंगे।

हॉल नं. ८
लोकनाथ वाचस्पति सभागार

विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगठनों एवं आर्य समाज के इतिहास की सच्ची अनछुई घटनाओं का मंचन व सांस्कृति कार्यक्रम एवं संगीत प्रस्तुति: इस हॉल में प्रतिदिन प्रात: 10 से सायं 6 बजे तक आर्य समाज की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं को आर्य विद्यालयों, गुरुकुलों, आर्यवीर दल-वीरांगना दल, दयानन्द सेवाश्रम संघ, विभिन्न आश्रमों के बच्चों द्वारा विभिन्न विषयों पर सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। साथ ही इसी हॉल में अन्य कार्यक्रम भी होंगे।

हॉल नं. ९
पं. फूलचन्द शर्मा सभागार

(२६-२७ अक्टूबर)

वैवाहिक परिचय सम्मेलन

(२५ एवं २८ अक्टूबर)

विभिन्न भाषाओं के संगीत व भजन

हॉल नं. १०
पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय सभागार

विषयानुसार व्याख्यानमाला

विभिन्न वैदिक विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यानों की प्रस्तुति

हॉल नं. ११
मोहनलाल मोहित सभागार

विदेशी प्रतिनिधियों के लिए संवाद कक्ष : प्रवेश केवल विदेशी प्रतिनिधियों के लिए।

हॉल नं. १२ : प्रदर्शनी

इस हॉल में विभिन्न विषयों को चित्रों के माध्यम से जैसे - वेद के ऐतिहासिक सन्दर्भ, महर्षि दयनन्द का जीवनवृत, नशा, शाकाहार, पशुवध, गौहत्या, आर्य समाज के दर्शनीय प्रेरक स्थल, महर्षि दयानन्द के स्मृति स्थल, विभिन्न भाषाओं के सत्यार्थ प्रकाश, डाक टिकटें, क्रान्तिकारी एवं महापुरुषों के चित्र, आदि ऐतिहासिक सन्दर्भों पर विशिष्ट प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। इसी के साथ सत्यार्थ प्रकाश के ताम्रपत्रों पर खुदे संस्करणों का भी प्रदर्शन होगा।

हॉल नं. १३
बालवीर हकीकत राय सभागार

बच्चों का कोना (किड्स जोन): इस हॉल में आर्य परिवारों के छोटे बच्चों के लिए आर्य समाज के इतिहास में पहली बार बनाई गई नैतिक शिक्षा की एनिमेशन मूवीज़, कॉमिक्स, खेल एवं बाल संस्कार देने की सुन्दर व्यवस्था बनाई गई है। आर्य परिवार अपने बच्चों का कुछ समय के लिए इस वातावरण में रख सकेंगे।

हॉल नं. १४
माता अमृतबाई सभागार

मदर्स कार्नर : 3 साल से छोटे बच्चों के साथ आने वाली माताओं के लिए विशेष रूप से बनाया गया है।

हॉल नं. १५
श्री गुरु विरजानन्द सभागार

ध्यान एव योग प्रशिक्षण : इस सभागार में योग एवं ध्यान की विशेष विधियों की चर्चा और अभ्यास सत्र होंगे।

हॉल नं. १६
पं. लेखराम सभागार

लेखक मंच : विभिन्न लेखकों द्वारा अपनी विशेष पुस्तकों का परिचय, लेखक परिचय एवं आर्य लेखकों की गोष्ठी का कार्यक्रम रहेगा।

हॉल नं. १७
वेद में विज्ञान संगोष्ठी

विभिन्न 15 वैज्ञानिकों द्वारा यज्ञ विज्ञान पर शोध की प्रस्तुति एवं यज्ञ विज्ञान से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी।

कार्यक्रमों में व्यवस्था एवं आवश्यकता अनुसार परिवर्तन की सम्भवना रहेगी। -संयोजक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की व्यवस्थाओं के लिए गठित विभिन्न समितियाँ

आशीर्वाद : स्वामी सत्यपति (रोजड़), स्वामी रामदेव महाराज (हरिद्वार), स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (उड़ीसा), स्वामी धर्मानन्द (आबू रोड), स्वामी वेदानन्द सरस्वती (उत्तर काशी), स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती (उत्तर प्रदेश), स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (हरिद्वार), स्वामी ऋतस्पति (होशंगाबाद), आचार्य याज्ञवल्क्य (झाला उत्तरकाशी), स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (दिल्ली), आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (राजस्थान), स्वामी मुक्तानन्द (उत्तराखण्ड), आचार्य स्वदेश (मथुरा), स्वामी अमृतानन्द सरस्वती (मध्य प्रदेश), स्वामी सदानन्द सरस्वती (दीनानगर), स्वामी विवेकानन्द सरस्वती (मेरठ), स्वामी विवेकानन्द सरस्वती (रोजड़), स्वामी यज्ञमुनि (उत्तराखण्ड), स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती (महाराष्ट्र), स्वामी शारदानन्द (राजस्थान), स्वामी ब्रह्मानन्द (मुजफ्फरनगर), आचार्य नन्द किशोर (होशंगाबाद), आचार्य एम. आर. राजेश (केरल), स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी (हरियाणा), स्वामी विष्वंग (राजस्थान), स्वामी व्रतानन्द सरस्वती (उड़ीसा), स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (महाराष्ट्र), स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (राजस्थान), आचार्य प्रद्युम्न (उत्तराखण्ड), स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती (वडलूरु), स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती (देहरादून), स्वामी गुरुकुलानन्द (पिथौरागढ़), साध्वी उत्तमा यति (दिल्ली), स्वामी सच्चिदानन्द (महाराष्ट्र), स्वामी सुधानन्द (उड़ीसा), स्वामी विदेह योगी (कुरुक्षेत्र), स्वामी वेदपति (गुजरात), स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती (करनाल), स्वामी कर्मपाल, स्वामी ब्रह्मानन्द (महेन्द्रगढ़)।

अन्तर्राष्ट्रीय स्वागत समिति : सर्वश्री अरुण कुमार बंसल (चेयरमैन, बंसल वायर), आदेश गुप्ता (महापौर, उत्तरी दिल्ली), डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती (प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल), रामनाथ सहगल (मन्त्री, टंकारा ट्रस्ट), डॉ. योगानन्द शास्त्री (पूर्व अध्यक्ष, दिल्ली विधान सभा), डॉ. रमाकान्त गोस्वामी (अ. भारतीय सनातन धर्म प्रतिनिधि सम्मेलन), प्रो. रासासिंह रावत (पूर्व सांसद, अजमेर), श्रीमती किरण चोपड़ा (चेयरमैन, व. नागरिक केसरी क्लब), बृजभूषण तायल (चेयरमैन, पाईटैक्स), जयदेव आर्य (राजकोट), नितिन्जय चौधरी (सचिव, आर्य अनाथालय, दिल्ली), सत्यानन्द आर्य (व. आर्य नेता, दिल्ली), कुंवर बृजेश रावत (विधायक, उ.प्र.), शत्रुघ्न लाल गुप्त (रांची), जगदीश सर्राफ (भिवानी), आनन्द कुमार चौहान (एमिटी शिक्षण संस्थान), योगेश मुंजाल (चेयरमैन, मुंजाल शोवा), राकेश ग्रोवर (चेयरमैन, ग्रोवर संस), डॉ. रामप्रकाश (पूर्व सांसद, राज्य सभा), शिवकुमार चौधरी (चेयरमैन, प्रतिभा सेन्टैक्स), ओम प्रकाश गोयल (प्रसिद्ध उद्योगपति, पानीपत), विजेन्द्र गुप्ता (नेता विपक्ष, दिल्ली विधान सभा), राव हरिश्चन्द्र आर्य (नागपुर), राजीव गुलाटी (निदेशक, एम.डी.एच.), ठाकुर विक्रम सिंह (अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली), प्रेम कुमार अरोड़ा (एम.डी.एच. परिवार), जगदीश शर्मा (प्रबन्ध सम्पादक, दैनिक भास्कर), श्रीमती विमला मेहता (दयानन्द शिक्षण संस्थान, फरीदाबाद), इन्दर गंगा बिसुन सिंह (प्रधान, आर्य दिवाकर, सूरीनाम), शिवेन्द्र प्रताप सिंह (प्रधान, आर्यसमाज बैंकॉक), अमर ऐरी (प्रधान, आर्यसमाज टोरंटो, कनाड़ा), डॉ.सुखदेव चन्द सोनी (प्रधान, आर्य समाज शिकागोलैंड), अरुण पदारथ (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, फिजी), डॉ. विष्णु महादेव (अध्यक्ष, गयाना सैन्ट्रल आर्यसमाज), माधव प्रसाद उपाध्याय (मन्त्री, केन्द्रीय आर्यसमाज नेपाल), अशोक खेत्रपाल (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार), ओम प्रकाश राय (प्रधान, आर्यसमाज सिंगापुर), कृष्ण चोपड़ा (यू.के.), गिरीश चन्द्र खोसला (अमेरिका), श्रीमती विभा केल (आर्यसमाज लन्दन), कमलाकान्त आत्रेय (प्रधान, केन्द्रीय आर्यसमाज नेपाल), प्रवीन जी (न्यूजीलैण्ड), विश्रुत आर्य (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका), कमल शर्मा (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा ऑस्ट्रेलिया), हरिदेव रामधनी (प्रधान, आर्य सभा मॉरीशस), सुरेश सोफट (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा ईस्ट अफ्रीका), हरेन्द्र सुन्दर (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा न्यूजीलैंण्ड), डॉ. बिसराम रामबिलास (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका), सूरेन महाबली (प्रधान, फासनेड-नीदरलैंड), योगेश आर्य (आस्ट्रेलिया), विनोद बिन्दल (दिल्ली), राकेश ठुकराल (दिल्ली), श्रीमती पैट्रोनिला बासदेव (अध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा त्रिनिडाड), रामचन्द्र आर्य (पाकिस्तान), विश्वजीत आर्य (ढाका), करण अस्त्रेयन (आर्मिनिया), हरि वार्ष्णेय (कनाड़ा), लवराज कुमार (न्यूजीलैंड)।

संयोजक समिति : सर्वश्री मास्टर रामपाल (प्रधान, हरियाणा सभा), राकेश चौहान (प्रधान, ज.कश्मीर सभा), योगमुनि (प्रधान, महाराष्ट्र सभा), प्रबोधचन्द्र सूद (प्रधाान, हि.प्रदेश सभा), डॉ. धीरज सिंह (कार्य. प्रधान, उ.प्र. सभा), सुदर्शन शर्मा (प्रधान, पंजाब सभा), विजय सिंह भाटी (प्रधान, राजस्थान सभा), सत्यवीर शास्त्री (प्रधान, विदर्भ सभा), संजीव चौरसिया (प्रधान, बिहार सभा), रमाकान्त सिंघल (प्रधान, असम सभा), मिठाईलाल सिंह (प्रधान, मुम्बई सभा), डॉ. विनय विद्यालंकार (प्रधान, उत्तराखण्ड सभा), भारतभूषण त्रिपाठी (प्रधान, झारखण्ड सभा), इन्द्र प्रकाश गांधी (प्रधान, म.भारत सभा), दीन दयाल गुप्त (प्रधान, बंगाल सभा), सुभाष अष्टिकर (प्रधान, कर्नाटक सभा), आचार्य अंशुदेव (प्रधान, छत्तीसगढ सभा), एस. के शर्मा (महामन्त्री, प्रादेशिक सभा), डॉ. धर्मतेजा (सं., अभियान समिति आ.प्र. एवं तेलंगाना), अरुण अब्रोल (मन्त्री, मुम्बई सभा), जोगेन्द्र खट्टर (महामन्त्री, द. सेवाश्रम संघ), सतीश चड्डा (महामन्त्री, आ.के.स. दिल्ली), डॉ. राधाकृष्ण वर्मा (उपप्रधान, सार्व. सभा), आचार्य विजयपाल (उपप्रधान, सार्व. सभा), सोमदत्त महाजन (उपप्रधान, सार्व. सभा), डॉ. ब्रह्ममुनि (उपप्रधान, सार्व. सभा), अनिल तनेजा (कोषाध्यक्ष, सार्व. सभा), वेदव्रत शर्मा (पू.मन्त्री, सार्व. सभा),

- शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 6 का शेष ओम प्रकाश आर्य (उपप्रधान, दिल्ली सभा), शिव कुमार मदान (उपप्रधान, दिल्ली सभा), श्रीमती मृदुला चौहान (उपप्रधान, दिल्ली सभा), वैद्य इन्द्रदेव (पूर्व महामन्त्री, दिल्ली सभा), देवेन्द्र पाल वर्मा (आर्यनेता, उ. प्रदेश), ओम प्रकाश आर्य (बस्ती, उ.प्र.), श्रीमती प्रकाश कथूरिया (प्रधान, प्रा.आ.म. सभा दिल्ली), श्रीमती रचना आहुजा (मन्त्री, प्रा.आ.म. सभा दिल्ली), यशपाल आर्य (व. आर्य नेता, दिल्ली), सुरेन्द्र कुमार रैली (व.उ.प्रधान, आ.के.स. दिल्ली), श्रीमती ऊषा किरण आर्या (उ.प्रधान, आ.के.स.), कीर्ति शर्मा, (उ. प्रधान, आ.के.स.), विक्रम नरुला (उ. प्रधान, आ.के.स.), राजेन्द्र दुर्गा (उ. प्रधान, आ.के.स.), अरुण प्रकाश वर्मा (कोषाध्यक्ष, आ.के.स.), ईश्वर गोयल (पानीपत), अजय सहगल (सम्पादक, टंकारा समाचार), वाचोनिधि आर्य (जीवन प्रभात), बलदेव सचदेवा (प्रधान, प.दि.वेद प्र. मण्डल), ओम प्रकाश यजुर्वेदी (प्रधान, द. दि.वेद प. मंडल), सुरेन्द्र आर्य (प्रधान, उ.प. दि. वेद प्र.मंडल), अशोक कुमार गुप्ता (प्रधान, पू.दि.वेद प्र. मंडल), सत्यवीर चौधरी (प्रधान, आ.के.स.गाजियाबाद), प्रभुदयाल चुटानी (प्रधान, आ.के.स. गुरुग्राम), शिव कुमार टुटेजा (प्रधान, आ.के.स. फरीदाबाद), श्रद्धानन्द शर्मा (संरक्षक, आ.के.स. गाजियाबाद), डॉ. महेश विद्यालंकार (वैदिक विद्वान दिल्ली), डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार (वैदिक विद्वान कुरुक्षेत्र), डॉ. सुरेन्द्र कुमार (का. प्रधान, परोपकारिणी सभा), ओममुनि (मन्त्री, परोपकारिणी सभा), अशोक आर्य (का. प्र. सत्यार्थ प्रकाश न्यास), गोपाल कृष्ण बाहेती (का. प्रधान, निर्वाण न्यास), सत्यवीर शास्त्री (महामन्त्री, सार्व. आ.वीर दल), जगबीर आर्य (संचालक, आ.वीर दल दिल्ली), श्रीमती शारदा आर्या (संचालिका, आ.वी. दल, दिल्ली), श्रीमती सुनीता आर्या (मुम्बई), राजेन्द्र कुमार (एम.डी.एच.), डॉ. धनञ्जय जोशी (प्रधान, आ.स.चेन्नई), विवेक शिनॉय (केरल), अशोक आर्य (अलवर)।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में वानप्रस्थ और संन्यास-दीक्षा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में इस बार भी गत सम्मेलन की भांति वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा के लिए नि:शुल्क वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा का भव्य कार्यक्रम आयोजित होगा। जो आर्य महानुभाव इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी वैदिक विद्वानों से वानप्रस्थ अथवा संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हों, इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

दीक्षा के इच्छुक महानुभाव कृपया अपना विवरण **'संयोजक, यज्ञ समिति'** के नाम **सम्मेलन कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** पर अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजें ताकि उनके संस्कार की समस्त व्यवस्था बनाई जा सके।

रेल यात्रा से पधारने वाले आर्यजनों के लिए ट्रांसपोर्ट (यातयात) व्यवस्था : कृपया ध्यान दें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि महासम्मेलन आयोजन समिति की ओर से **ट्रांसपोर्ट व्यवस्था** केवल **24 अक्तूबर की प्रात: से 25 अक्तूबर देर रात्रि तक** केवल और केवल दिल्ली के **प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली, हजरत निजामुद्दीन, आनन्द विहार, सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशनों** से ही यात्रियों को महासम्मेलन स्थल - **"स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै. 10, रोहिणी दिल्ली-85"** तक पहुंचाने के लिए उपलब्ध होगी। आप कहां से, कब, कितने बजे किस स्टेशन पर पहुंच रहे हैं इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमल करें। अथवा **श्री विपिन भल्ला जी को 9540086759 पर व्हाटसएप्प** करें। सूचना देने के लिए फार्म नीचे दिया गया है

अपने ईमेल/पत्र पर **"आवास एवं ट्रांसपोर्ट व्यवस्था हेतु"** अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांसपोर्ट व्यवस्था की जा सके। **वापसी में** भी इसी प्रकार **केवल 28 अक्तूबर की प्रात: से देर रात्रि तक** सम्मेलन स्थल से रेलवे स्टेशनों तक ही ट्रांसपोर्ट व्यवस्था उपलब्ध होगी। आर्यजन इस सेवा का लाभ उठावें।

कृपया नोट करें - दिल्ली के बस अड्डों से यात्रियों के लाने-ले जाने की कोई व्यवस्था नहीं की गई है। बसों से आने वाले आर्यजन दिल्ली मैट्रो सुविधा का प्रयोग करें।

टांसपोर्ट हेतु इन साधनों का भी प्रयोग कर सकते हैं

दिल्ली मैट्रो : सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली/पुरानी दिल्ली/आनन्द विहार/सराय रोहिल्ला एवं अन्तर्राज्यीय बसअड्डे कश्मीरी गेट, आनन्द विहार पर मैट्रो सुविधा उपलब्ध है। आप अपने निकटतम मैट्रो स्टेशन से रोहिणी वैस्ट का टोकन लेकर सम्मेलन स्थल पहुंचें। निजामुददीन रेलवे स्टेशन या सराय कालेखां बस अड्डे पहुंचने वाले आर्यजन वहां से प्रगति मैदान मैट्रो स्टेशन पहुंचकर सम्मेलन स्थल पहुंच सकते हैं। (मैट्रो में अधिकतम किराया 60/- है)

ओला/उबर कैब : अपने स्मार्ट फोन में OLA App या UBER App डाउनलोड करें। अपनी लोकेशन सैट करें और कार बुक करके सम्मेलन स्थल पहुंचें अधिकतम 4 लोगों के लिए बिल अनुसार किराया उचित।

ओटो : रेलवे स्टेशन/बस अड्डे से कोई भी ओटो लेकर सम्मेलन स्थल पहुंचे।

प्रीपेड टैक्सी : किसी भी रेलवे स्टेशन/बस अड्डे से प्री-पेड टैक्सी/ओटो लेकर भी उचित किराये के साथ सम्मेलन स्थल पहुंचा जा सकता है। (अधिकतम चार लोग)

- संयोजक, यातायात समिति

आवास/ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था हेतु सूचना का प्रारुप

1. ग्रुप लीडर का नाम : .....
2. मोबाईल नं. : .....
3. स्थान : .....
4. राज्य ....
5. व्यक्तियों की संख्या .....
6. ट्रेन नं. एवं नाम .....
7. आगमन स्थान : .....
8. आगमन की तिथि एवं समय: .....
9. स्टेशन से वापसी : .....
10. वापसी की तिथि एवं समय : .....
11. वापसी ट्रेन नं. एवं नाम : .....

दिनांक : ..... हस्ताक्षर

ठहरने के लिए क्या आप 'होटल' चाहते हैं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आप की भागीदारी महत्त्वपूर्ण है। आप सभी का सहर्ष स्वागत है। आप इस अवसर पर अधिकाधिक संख्या में आएँ और अन्यों को इसके लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर यदि आप ठहरने के लिए होटल में आवास सुविधा चाहते हैं तो संयोजक समिति द्वारा कुछ होटलों में सशुल्क आवास व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है। सामान्य होटल में मैट्रो के निकट, रोहिणी क्षेत्र में 2 स्टार ओयो रुम सम्मेलन स्थल से 2 किमी क्षेत्र में तथा 3 स्टार होटल सम्मेलन स्थल से 3-4 किमी की दूरी पर हैं। होटल शुल्क (सभी करों सहित) इस प्रकार है-

सामान्य होटल : 1500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

2 स्टार ओयो रुम : 2500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

3 स्टार (विद ब्रेक फास्ट) : 3500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

यदि आप कमरे में तीसरे बैड की व्यवस्था चाहते हैं तो अतिरिक्त शुल्क पर बैड उपलब्ध हो सकेंगे। उसके लिए आप स्वयं होटल में बात कर लें। अनुमानित रूप से तीसरे बैड के लिए सामान्य होटल में 300/-, 2स्टार में 500/- तथा 3 स्टार में 800/- रुपये में देय होंगे। अतिरिक्त बैड की ये दरें अनुमानित हैं। इसके लिए आप स्वयं अपने आबंटित होटल में पहुंचकर बात करें।

सभी होटल पूर्णत: ए.सी., अटैच टॉयलेट और आवश्यक सुविधाओं से युक्त हैं। यदि आप सुविधा का लाभ उठाना चाहते है तो देय राशि का बैंक ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018"** के नाम बनाकर अपने नाम, पता एवं दूरभाष सहित पूर्ण विवरण पत्र द्वारा सम्मेलन कार्यालय को भेजें।

नोट : आप स्वयं भी रोहिणी, पीतमपुरा, शालीमार बाग एवं आस-पास के क्षेत्रों में धर्मशाला/होटला ओयो रुम विभिन्न बैवसाइटों के माध्यम से बुक करा सकते हैं आप द्वारा स्वयं बुक कराने से सम्भव है कुछ कम राशि में बुकिंग हो सके।

- संयोजक, आवास समिति

स्टाल बुकिंग के सम्बन्ध में कृपया ध्यान दें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली के अवसर पर सम्मेलन स्थल पर लगने वाले पुस्तक बाजार में स्टाल बुकिंग का कार्य काफी समय पूर्व पूरा कर लिया गया है। जितने भी स्टालों की व्यवस्था की गई थी वे आरक्षित कराए जा चुके हैं। अत: सभी संस्थानों/प्रकाशकों/पुस्तक विक्रेताओं से निवेदन है कि स्टाल बुकिंग के सम्बन्ध में कोई पत्र व्यवहार न करें। अधिक जानकारी के लिए संयोजक बाजार समिति मो. (9868244958) से सम्पर्क करें। *- सम्मेलन संयोजक*

आवास व्यवस्था हेतु कृपया ध्यान दें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर यदि आप सम्मेलन स्थल मैदान में ही बनें आवासों में ठहरने की व्यवस्था चाहते हैं तो कृपया ध्यान दें -

1. सम्मेलन के दिनों में रात्रि का मौसम हल्की ठंड वाला होगा। अत: अपने ओढ़ने एवं बिछाने के लिए सामान्य चादर या पतला कम्बल अवश्य साथ लाएं, जिससे आपको सुविधा हो।

2. जो महानुभाव ग्रुप में आ रहे हैं। वे अपने ग्रुप लीडर का नाम, पता, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर आवास समिति के नाम सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमल करें। अपने ईमेल/पत्र पर **"आवास व्यवस्था हेतु"** अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांसपोर्ट व्यवस्था की जा सके।

जो व्यक्ति एक साथ, एक ही साधन से एक ही समय पर पहुंच रहे हैं, उसे ही ग्रुप कहा जाएगा। अत: यदि आप एक ही संस्था/आर्यसमाज के सदस्य होने पर भी अलग-अलग समय/साधन से आ रहे हैं तो उसके लिए पृथक से ग्रुप लीडर बनाएं और उसी के हिसाब से पधारने वाले सज्जनों की सूची भेजें। *- संयोजक, आवास*

8 साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 1 अक्तूबर, 2018 से रविवार 7 अक्तूबर, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 4-5 अक्तूबर, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 अक्तूबर, 2018

प्रतिष्ठा में,

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-26-27-28 अक्टूबर, 2018

स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै. 10, रोहिणी, दिल्ली - 110085

दिल खोलकर सहयोग करें

नई दिल्ली के स्वर्णजयन्त पार्क (जापानी पार्क) रोहिणी सै. 10 में 25 से 28 अक्टूबर-2018 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आप में बहुत बड़ा सम्मेलन होगा। इस महासम्मेलन में दुनिया के 32 देशों से 5000 से अधिक आर्य प्रतिनिधियों के साथ सम्पूर्ण देश से 2 लाख से अधिक आर्य जनों के इसमें पहुँचेगें। महासम्मेलन में आने वाले प्रत्येक आर्य के लिए सभी व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं के लिए आप सबका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है। सभी आर्यजनों, आर्य संस्थाओं, आर्य समूहों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य महिला सभाओं/ संस्थाओं से निवेदन है कि अपनी सहयोग राशि चैक/बैंक ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन - 2018"** के नाम बनाकर भेजने की कृपा करें। यह सम्मेलन आप का है और आप के सहयोग से ही यह हर प्रकार से अद्वितीय बन सकता है। कृपया अपनी सहयोग राशि **'संयोजक'** के नाम **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।**

दानी महानुभाव अपनी दान/सहयोग राशि सीधे महासम्मेलन के बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है -

"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन - 2018"

State Bank of India	Axis Bank	ICICI Bank
A/c No. 37815923237	A/c No. 918010068587610	A/c No. 663701700794
IFSC Code : SBIN0001639	IFSC Code : UTIB0002193	IFSC Code : ICIC0006637

कृपया अपनी दानराशि जमा कराते ही अपनी डिपोजिट स्लिप अपने नाम, पते एवं मो. नं. के साथ तत्काल रूप से श्री अशोक कुमार जी (9540040322) अथवा श्री मनोज नेगी जी (9540040388) को व्हाट्सएप्प कर दें, जिससे आपको राशि की रसीद भेजी जा सके।

- सम्मेलन संयोजक

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

95, 00, 000 + दर्शक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

- महामन्त्री

-: कहां आना है आपको : -
स्वण जयन्ती पार्क, सै. 10, रोहिणी
-: कब आना है आपको : -
25-28 अक्तूबर, 2018
-: क्या लाना है आपको :-
आस्था भरा हृदय
-: क्या मिलेगा आपको : -
जीवन जीने का सूत्र
-: किस-किस को आना है :-
सभी को
-: क्या सुविधा है आपकी :-
आवास, भोजन आदि सभी कुछ
-: विशेष आग्रह है आपसे :-
श्रद्धा के साथ आएं जीवन आनन्द उठाएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह